बायो गैस क्या है ?

जैविक अपशिष्ट जैसे कि गोबर, बचा हुआ खाद्य पदार्थ और फसल अवशेष के अवायवीय पाचन से बायो गैस का उत्पादन होता है । इस प्रक्रिया में, कुछ कार्बनिक पदार्थ मीथेन (CH_4) तथा कार्बन डाई आक्साइड (CO_2) गैस में बदल जाता है । वायु के इस मिश्रण को बायोगैस कहते हैं। बायोगैस की संरचना में 50 से 75 प्रतिशत CH_4 और 25 से 45 प्रतिशत CO_2 होता है । प्राकृतिक गैस की तरह बायोगैस को भी शक्ति जेनरेटर, इंजिन, ब्वायलर और बर्नर में प्रयोग कर सकते हैं।

ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में उपयोग के लिए लाभदायक क्यों है ?

- सभी कृषकों के पास जानवर होते हैं और संयंत्र के संचालन हेतु गोबर उपलब्ध होता है ।
- गैस सिलिंडर (LPG), किरोसीन (मिट्टी का तेल) और विद्युत (बिजली) ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं होती, इसलिए बायो गैस की महत्ता बढ़ जाती है ।
- कृषक जैविक खेती को अपना रहे हैं । बायोगैस की स्लरी जैविक खेती हेतु एक अच्छा निवेश है।
- कृषक आस पास के जंगल में जलाने की लकड़ी लेने जाते हैं । वहाँ पर जंगली जानवरों के आक्रमण का खतरा होता है और मानव-जंतु संघर्ष भी बढ़ जाता है । जब बायो गैस का प्रयोग किया जाता है तब यह जोखिम कम हो जाता है ।
- ग्रामीण क्षेत्र में रसोई में जलाने की लकड़ी और किरोसीन के प्रयोग से बहुत अधिक धुआं और सम्बंधित स्वास्थ्य समस्या का खतरा होता है । बायोगैस महिलाओं को खाना पकाने के विकल्प के रूप में एक स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करता है ।
- महिलाओं और बच्चों को जलाने की लकड़ी को इकट्ठा करने में बोझा ढोने से बचाता है, रसोई में धुँए से बचाता है और खाना पकाने में लगने वाले समय और बर्तन धोने में लगने वाले अधिक समय से भी बचाता है ।
- ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार सृजित करता है । नवयुवक इसके रखरखाव का प्रशिक्षण ले सकते हैं और भविष्य में बायोगैस इकाई की मरम्मत और रखरखाव को रोजगार के रूप में अपना सकते हैं । जलाने की लकड़ी को इकट्ठा करने से बचे हुए समय से महिलाएँ अतिरिक्त आय सृजन के क्रिया कलाप कर सकती हैं ।
- घर से निकले हुए अपशिष्ट और जैविक-अपशिष्ट को उपयोगी और स्वस्थ रूप से निस्तारित किया जा सकता है (यहाँ वहाँ न फेंक कर और गन्दगी न फैलाते हुए)।

बायोगैस परियोजना के उद्देश्य

- इस परियोजना का उद्देश्य जलवायु समुत्थान को बढ़ाना और स्वच्छ ऊर्जा तकनीकी के समावेश से उत्तराखंड के ग्रामीण परिवारों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है । इस परियोजना का लक्ष्य 3000 बायोगैस का निर्माण, परियोजना प्रारंभ के २ वर्ष के अन्दर करना है । इस परियोजना का एक और लक्ष्य अगले 10 वर्षों में जलाने की लकड़ी की बचत से कार्बनिक साख (कार्बन क्रेडिट) को जमा हासिल, छोटे पैमाने पर गोल्ड स्टैंडर्ड सत्यापित उत्सर्जन में कमी (VER) प्रमाणीकरण की प्रक्रिया के द्वारा करना है ।

बायोगैस परियोजना का परिक्षेत्र

- परियोजना उत्तराखण्ड के नैनीताल, उधम सिंह नगर, हरिद्वार जिले के ग्रामों जो कि जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान एवं नन्धौर अभयारण्य के आस-पास है, में चलाई जा रही है ।

चयनित माडल

- वर्तमान में भारत में चार प्रकार की बायोगैस तकनीकी उपलब्ध है, इनमें से, दीनबंधु मॉडल पूरे देश में सर्वाधिक रूप से अपनाया जा रहा है और अब तक इसका प्रदर्शन उत्तम रहा है ।

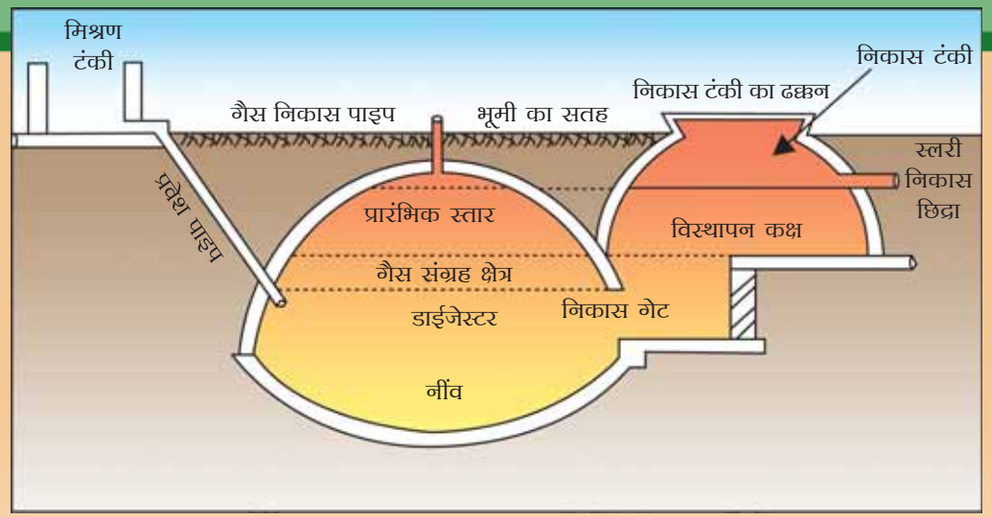

प्रति इकाई निर्माण में लाभार्थी का अंशदान

क्र.सं.	बायोगैस का आयतन घन मी	लाभार्थी अंशदान रू.
1	1 घन मी	4,000
2	2 घन मी	8,500
3	3 घन मी	10,000

अधिक जानकारी, रखरखाव और कार्य सम्बंधित सूचना हेतु संपर्क करें ।

परियोजना समन्वयक - बायोगैस

मोबाईल - 9997398015

ई-मेल : biogas@intercooperation.org.in, ashish@intercooperation.org.in

पताः

इंटरकोआपरेशन सोशिअल डेवलपमेंट इंडिया

153/A/4 सैपर्स लेन, बालमराय, सिकंदराबाद - 500 003, इंडिया.

फोन : +91-40-27906991/52, फैक्स : +91-40-27906954 ई-मेलः info@intercooperation.org.in

दिल्ली कार्यालय : आइ एस एस बिल्डिंग, 8, नेल्सन मंडेला रोड, वसंत कुंज, नई दिल्ली - 110070, फोनः011 43158815

बायो गैस परियोजना - उत्तराखंड